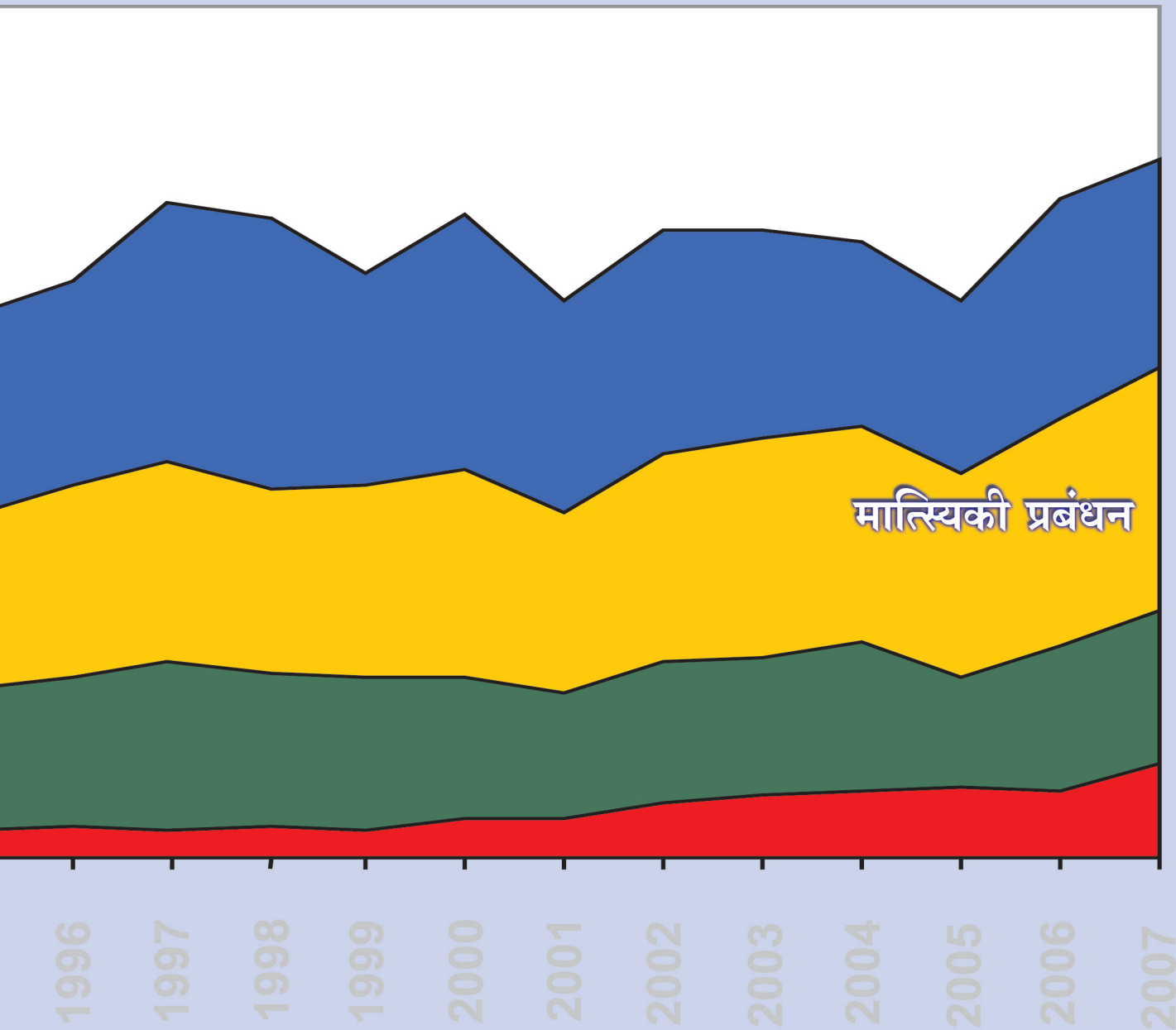


मत्स्यगंधा

2007



केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
कोची 682 018

कर्नाटक के अध्नाशिनी मुहाने में चूना कवच विदोहन

गीता शशिकुमार, सुजिता तोमस और ए.पी. दिनेश बाबू

सी एम एफ आर आइ का माँगलूर अनुसंधान केंद्र, माँगलूर, कर्नाटक

तटीय मेखला प्रबंधन को चेतावनी देनेवाला मुख्य बात समुद्री आवास व्यवस्थाओं में चोट पहुँचाए बिना बहुविध उपभोक्ताओं की माँग को नियमित किया जाना है। मात्स्यिकी प्रबंधन में हमेशा प्रभवों के प्रबंधन पर ध्यान दिया करता था लेकिन हाल में मत्स्यन से होनेवाले पर्यावरणीय संघातों जैसे आवास व्यवस्थाओं का नाश, अलक्षित जीवजातों की पकड़ प्राकृतिक तटों व वस्तुओं का चूषण पर ध्यान आकृष्ट हुए हैं। तटीय मृदु मृत्तिका में रहनेवाले कई प्रकार के जीवजात जैसे सीपी; मृदा में छिपकर जीनेवाले अनेकानेक जीवजात समुद्र तटों के निक्षेपण व बदलाव से खतरे में पड़ा जाते हैं।

कर्नाटक के अध्नाशिनी मुआइना द्विकपाटियों का एक अच्छा केंद्र है। इस क्षेत्र को सकेन्द्रित करके मत्स्यन, कृषि, सीपी संभरण, जलकृषि, नमक उत्पादन और कवच खनन चल रहे हैं। 2500 हे. क्षेत्र में विस्तृत इस मुहाने में सीपियों का विशाल संस्तर है जहाँ सीपी जातियाँ जैसी *मेरेट्रिक्स कास्टा एम. मेरेट्रिक्स*, *पाफिया मलबारिका* भारी मात्रा में दिखाई-पडती है। टिसे (tisre) फूबे (kubē) नामक जनप्रिय सीपियाँ यहाँ से नियमित रूप से विदोहित होती है। सीपी के अलावा सीपियों के उप जीवाश्म निक्षेपण का खनन भी यहाँ से वर्षों से हो रहा है।

पत्रव्यवहार : गीता शशिकुमार, वैज्ञानिक

सी एम एफ आर आइ का माँगलूर अनुसंधान केंद्र, पी बी सं 244, बोलार, माँगलूर, कर्नाटक

चूना कवच निक्षेपण

प्राकृतिक संस्तरों में कवच मछलियों की अवनति से कवचों का दीर्घकालिक निक्षेपण होने पर उन में निहित कालस्यिम नामक वस्तु से चूना का उत्पादन होता है। अध्नाशिनी मुहाने में 1-1.5 मी. गहराई में करीब 5 कि. मी. विस्तार में चूना निक्षेपण दिखाया पडता है। 8 वर्ग कि. मी. क्षेत्र में 1.5 से 1.5 मी. घनत्व में निक्षेपण व्याप्त पडा है।

चूना कवच का खनन

मुहाने क्षेत्र खनन केलिए मैन अन्ड जियोलजी विभाग को पट्टे पर दिया हुआ है। पुरुष कवच खनन और महिलाएं कवच के हस्तचयन में लग जाते हैं। यहाँ से प्रति डंगी में 400 कि. ग्राम चूने का शोषण होता है; प्रति दिन 700-800 डंगी का प्रचालन से करीब 300 टन चूने का परिवहन होता है।

प्रक्रमण

उप जीवाश्म कवच जमाव में 10% मृदा, 30% कवच कण और 60% विविध द्विकपाटी मृदुकवचियों के बडा घिसा गया कवच है। सिर्फ मरा कवचप्राणियों का कवच होता है। जो पालियों में मिलता है। कवच संसाधन करने को एक यांत्रिकी वाशर-कम-सोर्टर (ड्रम) में डालकर अच्छी तरह समुद्री पानी से धोया जाता है जिस से मिट्टी निकल जाता है। ड्रम एक छाननी का काम करता है और नीचे समेटे कवच कण को निकालकर सुखाया जाता है।



उत्पादन

यहाँ से रोज़ 25 से 40 ट्रक चूना का परिवहन होता है। एक ट्रक का भाव 5,000 रु. है हाल का वार्षिक उत्पादन 66,000 टन है।

उपयोग

कवच चूना का उपयोग उद्योग जैसे पल्प निर्माण, विरंचन,

औषधियों का निर्माण, लेथर नरम करने, चूना निर्माण केलिए किया जाता है। कुक्कुट भोजन की तैयारी व जलकृषि में पानी का अम्लीकरण के लिए प्राचीन काल से इसका उपयोग होता है।

चूना निर्माण केलिए कवचों का उपयोग परंपरागत काल से ही हैं। हाल का आर्थिक विकास से उपयोग बढ़ गया है जिस से प्राकृतिक संस्तरों का अवक्षय और संबंधित पर्यावरणीय समस्याएं उठ गई है।

मुख्य शब्द/Keywords

द्विकपाटी - bivalve

उपजीवाश्म निक्षेप - sub fossil deposit

डुंगी - canoe

कवच कण - shell grit

घिसा गया कवच - abraded shell

विरंचन - bleaching

